श्री श्री गौरांगविधुर्जयति

ब्रजभाषा में

गौरांग भूषण मञ्जावली

श्री श्री सनातन गोस्वामीजी के
शिष्य गौरगणदास जी कृता।

अर्थ सहायक—
गौरनिष्ठ राजा रघुनन्दन प्रसाद जी,
मूंगेर।

प्रकाशक—
बाबा कृष्णदास,
कुसुम सरोवर, (गोवर्द्धन) मथुरा।

सर्वाधिकार सुरक्षित है।

प्रथमावृत्ति १०००]
सम्वत् २००७] मूल्य ।)2/8

प्राक्कथन

आज हम करुणा वरुणालय, जगदाधार, प्रेम पुरुषोत्तम, प्रेमावतार श्रीमन्महाप्रभु की कृपा से अद्भुताद्भुत मधुरातिमधुर, वचनातीत, अपूर्व उनही प्रभु के गुण गरिमा से भरपूर "गौरांग भूषण मंजावली" नामक दिव्यातिदिव्य वस्तु (ग्रंन्थ) रत्न को रसिक प्रेमी जनता के समक्ष उपस्थित करने में समर्थ हुए हैं। यद्यपि अनेक स्थलों पर कठिन होने के कारण यह साधारण बोध गम्य नहीं है तो भी इस की रचना शैली, शब्द विन्यास व भाषा परिपाटी को देखने से सबका सिर झुकजाता है। इस प्रकार रचना शैली उन प्रभु की कृपा बिना नहीं हो सकती है। आपके विषय में कोई विशेष बात हमें मालूम नहीं है। परन्तु इस ग्रंथ में से ही पता चलता है कि आप श्री सनातन गोस्वामी चरणों के आश्रित प्रिय शिष्य थे। इस काव्य में बहुत सी शब्द योजना कठिन होने पर भी अनेक स्थलों पर सरल भी है। इस में कई वस्तु संचित है। सर्व प्रथम श्री गुरुदेव स्वरूप-वर्णन, दूसरे श्रीमहाप्रभु का रूप शृंगार वर्णन, तीसरी प्रार्थना-चौथी शृङ्गार मंजावली दो भाग, पांचवां सिद्धान्त संपुटित सपार्षद प्रभु का साम्राज्य चक्रवर्तित्व रूप से वर्णन है। इनमें से प्रार्थना तथा सिद्धान्त बहुत मनोहर तथा सरल और अवश्य विचारणीय वस्तु है। अधिक क्या कहें सामने ही काव्य प्रस्तुत है रसिक जन कृपया देखलें। प्रथम मन में ऐसा विचार हुआ था कि इस के कठिनांश को कुछ सरल अनुवाद के साथ प्रकाशित करें किन्तु अनजान में महानुभावों का निगूढ़ आशय किंवा ग्रन्थ का मार्मिक भाव कहीं बिगड़ न जाय इसलिये वह

Vrindavan Das
Govind
Vrindavan

विचार ही स्थगित कर दिया और प्राचीन वस्तु लोप न हो जाय इस आशंका से शीघ्र प्रकाशित करना ही उचित समझा। अपने पूज्य बड़े गुरुभ्राता तथा ब्रज में प्रसिद्ध,श्रीबाबा गौरॉगदासजी के मुख से कई बार इस गौरांगभूषण मंजावली के कुछ सुन्दर रसीले पद सुनने में मिले थे। जब से हम उसकी खोज में थे। दैवात् पूंछरी निवासी,नित्यधाम प्राप्त श्रीबाबा माधवदासजी के आश्रिय शिष्यवर बाबा किशोरीदासजी, कालिदह वृन्दावन निवासी के पास में से सम्पूर्णवाणी प्राप्त। हुई दूसरी कापी श्री बाबा वंशी-दासजी गौघाट वृन्दावन निवासी के पास से व तीसरी प्रति उक्त श्री बाबा गौरॉगदास जी से मिली, पीछे की दोनों कापी में समप्रति पद नहीं मिले। इस पुस्तक के प्रकाशन करने में समस्त व्यय मुंगेर निवासी गौरनिष्ठ राजा रघुनन्दनप्रसादसिंह जी ने उठाया है अतः हम इन सब महोदय के आभारी है॥

विनीत

कृष्णदास

कुसुमसरोवर

गोवर्धन (मथुरा)

वि० सं० २००७

श्री श्री गौरगन दास जू कृत—

❀ श्री श्री गौरांग भूषन विलास प्रारम्भ ❀

तत्र श्री गुरुदेव स्वरूप वर्नन

सवैया—गुरुदेव दयाल दया कीनों दरसाय दियो मम उर निजरूपा। शेश कहूँ के रमेश कहूँ पुनि भिन्न अभिन्न सो ईस सरूपा। विषय भुजंग ग्रसत गहि लीनो बूडत हो भव मोहतम कूपा। निरपेक्ष कृपा परवार दऊं सब विश्व बिभव दिग पालन भूपा ॥१॥ जनम अनेक फिरयौ भटकत भव ज्यों उनमाद महाजड बौरा। विषयारस लंपट बीत गये जुग ज्यों सूकर ग्राम फिरयौ चहुँ ओरा। ईश अधीस तज्यो सबने लख अघ ओघ को भार नहीं सिर थोरा। ता गुरुदेवहिं नमन करूं झुक खेंच लियो जिन गहि निज ओरा ॥२॥ अलकावलि कोमल रुचिर रची ज्यों सौरभ बस मधुकर बृंद सुहाये। शशिखंड प्रदीप्त इव भाल मनोहर भृकुटी छबि लखि धनु खंड लजाये। श्रवनन मग श्रुति रूप बसै अरबिंद छटा दल नैन चुराये।

कीरकी नासा हरन करी सुढार कपोल चिबुक मन भाये ॥३॥ बिद्रुम पल्लव दल सुष्टु अधर पुनि दंत की पंक्ति ज्यों कुन्द कली है। रसना शुभभारती ब्रह्मसुता वर वेद सुघोष की धुनी भली है। केसर मृग मद श्रीखंड कदलिया भालपै सौरभ रेख ढली है। कबु की आभ सुकंठ सजैत्रय रेख सु पुन्य कों पुंज फलीहै ॥४॥ उरोर्वि-पुल विस्तीर्ण उन्नत फल बिल्व सुढार ढराई। वृषभ ककुस्थ अस्कंध प्रलम्ब भुजा लखि परघ पराई। अंगुरी सुंदर जलजात कली नख मनी किरन लखि तिमिर नसाई। उज्जल रोमावलि अंशु जथा बालार्कप्रभा जनु शांत बहाई ॥५॥

छप्पै—रेखा कर मध्य सोहै लक्ष्मी स्वरूप जो है कल्पतरु वतगुन नित बरषावहीं। उदर सुमृदु ढार अस्वस्थ ज्यों पत्राकार त्रिवली रुचिर देखि मन सरसावही। नाभि अति गंभीर जमुना भृमर छीन केहरी कटि कटि लीन छवि उपवीत पीत पावही। पृथुल नितम्ब भारी नील पट पट धारी उरू रंभा खंभ निरखि मन बस लावही। पीडुरी ललित गोल गुलफन की ढारी ढोल चरन कमल तम हिये को नसावही। अंगुली ज्यों चंपकली चन्द्रकांता जटी भली अरुन सुतल रेखागन दरसावही ॥६॥

सवैया—उज्जल मुख चन्द्र सो निरख रहूँ ऊर्ध पुंड्र को भाल पै रुचिर संभारू। गल तुलसी माल रचूं पावन पुनि कुन्दकी कली जुही गुहि धारूं। कोमल मृदु आसन अर्पि दऊं नईवेद पुनीत सो अर्घ उतारूं। धूप और दीप करूं हित ते करि चरन प्रनाम फिर तन मन वारूं ॥७॥ ऐसे हि गुरु ईसहि जो न भजै तो दूसरे ईस की साखि कहा है। मति मन्द फिरै वसी जग ऐसेहि जनम समूह सिराहैं। सुर असुर चराचर जीव सभी जग कर्म की डोर ने बद्ध करा है। तृष्णा बस व्याकुल दीन दुखी तिनको गुरुदेवहि एकहि सहा है ॥८॥ इति गुरु प्रार्थना व स्वरूप वर्णन सम्पूर्ण ॥

श्री श्री गौरांग नित्यानंदौ जयतां श्री श्री निकुंज विहरिण्यै नमः

अथ मंगलाचरण श्लोक

गौडोदयमुपयान्त स्तमः समस्तं निहंति यो युगपत्।
जोतिश्च योतिशीतः पीतस्त मुपास्महे कृतांजलयः ॥१॥

लक्ष्मीरमिंदिन्दिरपीतमंगुलिच्छदोल्लसन्सुन्दरमधुप्लुतम्।
पादारविंदं नखरांशुकेशरं स्मराम्यहं कंसहरस्य सर्वदा ॥२॥

तत् कैशोरं तच्च वक्तारविंदं तत् कारूण्यं ते च लीलाकटाक्षाः।
ततसौंदर्यं सा च सांद्रस्मिता श्रीः सत्यं सत्यं दुर्लभं दैवतेऽपि ॥

इति मंगलाचरन के श्लोक सम्पूर्ण।

अथ श्री श्री गौरांग भूषन विलास मंजावली लिख्यते श्री श्री गौरगनदास जू कृत अथ मांझ छप्पै—

रस भूषित गौरांग प्रेम बपु उज्वल नीके।
रस भोजन रस शयन बैंन रस बिन सब फीके॥
रस में बिलसन कुंज केलि रस पगे अमीके।
ठाकुर परम रसाल चसक रस बस जु भली के॥
रस उमगे निसियाम सहचर गन रस हीके।
बिन लखे गौर बिलास रचै का भूषन जीके॥१॥इति॥

अथ मांझ—

श्री गौर रूप को लखा नहीं तो प्रेम स्वाद विपरीत लखै।
मनसिज विलास रस पगा नहीं तो कहा मधुर रस रीत लखै॥
भाव भेद गति लखी नहीं पावक कपूर सम प्रीति लखै।
गुरु मार्ग को लखा नहीं तो ईस इष्ट विपरीति लखै॥२॥

जो—गीस श्वेत छीरोद पती गर्भोद परे कछु और कहा।
कारनपति उज्वल रूप लखा सायुज्य वृह्म परे और कहा॥
ता परे भिन्न बहु भेद लखे ता परे अधिष्ठित और कहा।
ता परे मधुर छबि रूप लखा पुनि लोक अनेकन और कहा॥३॥

तत रूप तजा तत रूप तजा तत रूप परे तद रूप रचा।
तत सार खेंचि मृदु सिंधु रचा तद रूप अभिन्न सरूप रचा।
तत रूप विपक्षी त्यक्त किये तद योग्य सुधा सुरूप रचा।
सुधा मथन संभूत छवी पुनि ईस पतिन का भूप रचा॥४॥

सो अवांग मन गोचर बानी बेद भेद नहिं कोई लखा।
श्रीरूप सनातन विलसि रहे, नित सरित मीन ज्यों कोई न लखा॥
जलजात मुखी सुख पान करें पुनि जीव कृपा बिन कोईन लखा।
श्री गुरु कृपा अवलोकि सुलोचन दीन गौरगन सोई लखा॥५॥

छप्पै– भाव भेद रस भेद उपासक भेद सो कीनों।
बहुरि उपास्य सरूप भेद तजि लखि तेहि चीनों॥
उज्बल प्रेम सरूप मधुर ठाकुर रंग भीनों।
बढ़ै परम अनुराग सुख सेवा में लीनों।
भाव सुमन चुनि ग्रंथ आभरन गौरहि दीनों॥६॥

इति सिद्धान्त की मांझ सम्पूर्ण

अथ सिंगार की मांझ लिख्यते

प्रेम पान छक छकन मत्त बपु लोक व्यक्त कोई गौर हरी।
चपला गति चन्द्र से अमी झर लावन्य छवी कोई गौर हरी॥
रस सिंधु सरस ज्यों मीन रमै त्यों केलि रसिक कोई गौर हरी।
आनन्द तरंग बस उमग उमग नव भाव बृद्धि कोई गौर हरी॥७॥
जिमि सुमेरु गिर ऊर्ध सरस जलधरने रस्मी जाल रचा।
नव प्रसूत उज्वल मृदु कोमल अमी सोच कर हाल रचा॥
भाव उदधि मथि उदय भया शृंगार छटा गन बाल रचा।
स्याम मृनाल सुता विधि ने लाख अलीजूथ का माल रचा॥८॥
पुनि तड़ित अंशु रतिनाथ प्रभा विधि वाहन रिपुको बंद किया।
बिच कवी बीर वधु पंक्ति लस भूमी सुत आभा फंद किया॥
इन्द्र चाप छबि सुभग मध्य बासक आ मुख में चन्द किया।
भेद बाल रवि कलिन्दसुता प्रस्थान हेतु छलि छन्द किया॥९॥
सात कुम्भ विद्युत रस उज्जल रमा कान्ति को हीन करै।
छबि मयूख गन चक्र मध्य कछु सुधासार को लीन करै॥
उपमा वारिधि मथि ससी रचा लावन्य हीन सा दीन करै।
अखिल ईस शृंगार सार उपमा को कवी प्रवीन करै॥१०॥

घन मयंक पर शेष प्रभा चामीकर निर्मल धार वही।
जलधि पटल पर चन्द्र पिघल उज्वल रस सलिता धार वही॥
वारी सुत छवि से टंकि जटी जनु छीर फेन मृदु धार वही।
तट तरंग गन अरुन प्रभा विद्रुम निरस्त कुज धार वही॥११॥

हरित सार पर राग वती जोत्स्नांशु विभाति छजै।
अमित प्रकीर्न सिद्धिगन लख योगीश ईस विभाति लजै॥
विचित्र कूट छवि जाल मंडन सिखी विहंग सुजात भजै।
वक्र गती सुपक्ष कृता मध्य कवी मृदु गात भजै॥१२॥

श्रिया प्रदीप्त पुन रश्मि प्रकीर्न नव ग्रहों का जाल कसा।
परमोत्कृर्ष्ट धनु खंड मिष्ट लखि मीन केतु रस भाल कसा।
तड़ित विलिप्त मनि हेम लिप्त मृदु लोहितांग गन हाल कसा॥
चंपक प्रसूतिकवि गात्रर्चितमनसिज सुभचंचल चाल कसा॥१३॥

किंजल्क कोश चन्द्रांशु कोश कुछ अमी नीर सा टपक रहा।
जल जात कोश रस सार कोश मधि अरुन सुधा सा लिपट रहा॥
सोपान रुक्म गत मन्द कोष्ट रस लोभ अली सा झपट रहा।
तपनीय आभ सुष्टुवु सुभाव उपमा जुवती गन भटक रहा॥१४॥

मनोभिराम मनसिज विलास गत अरविन्द खंड अलि मत्त लसै।
चन्द्रार्ध रेखरवर भानु रेख कंदर्प रेख ढलि चारु लसै॥
चंचल विलोल रसि भाव लोल जनु मीन काम रस भली लसै।
विवृत आभ प्रवृत भाव विक्षिप्त श्री ससि कली लसै॥१५॥

नीलोत्पलाभ छवि गति पीत जलज गत अरा हुआ।
ताही सुवृति क्रीड़ा सुनृत्य वपु भौम कोष्ट गत धरा हुआ॥
पीतोत्पलाभ रति कोष्ट विभाव मकरन्द सुधासद भरा हुआ।
अद्रि सुता पुनीत चंचल सुनीति पुनि चन्द्र पान रति करा हुआ॥

मथि सिन्धु सार प्रेमोर्मिजाल लावन्य कंवु छवि वृद्धि करै ।
गत जात छटा जल जात छटा मेघ रश्मि छवि वृद्धि करै ।।
चन्द्रांशुधार नीलांवु धार जनु मदन रती छवि वृद्धि करै ।
रक्तांशु रेख धनु चक्र रेख लखि विष्णु चाप छवि वृद्धि करै ।।१७।।

लावन्य सार मकरंद प्रभा चलि रमा धाम को घेर दियो ।
रवितनया विद्यु त अंश लिये श्रृंगार सिन्धु को फेर दियो ।।
मन मथ विलास सर सुभग रचा रतीसार को हेर कियो ।
अरचीत रंग उल्लास उठै आनन्द ब्रह्मजनु नेर कियो ।।१८।।

वेदी नियुज्य आनन्दसार सुभ सरोज के मध्य रची ।
तत्रेशु देवी श्रिया ज्वलंती छवि सरोज के मध्य रची ।
मनसिज विलासिन्य रस वर्ध हेतु स्वर्न सरोज के मध्य रची ।।
बभूव नित्यार्चन कंदर्प इष्टों सुंदर सरोज के मध्य रची ।।१९।।

मनसिज विलास तट हेम श्रृंग पुनि दरी मंत रचि विश्वपती ।
चन्द्र भास्कर मेघ बिन्दु विद्यु त गत मंगल विश्वपती ।
पुन्य वेद गत इष्ट श्रेय प्रद रती इष्ट रचि विश्वपती ।
रती भाव विजै को मदन सजै अर्चन हेतू रचि विश्वपती ।।२०।।

श्रृंगार सार मथि उदय भये जल जात हेम छवि बाल लता ।
पुनि मयूख गन मध्य सजी विद्यु त रस उज्वल बाल लता ।
कंदर्प चसक बस कंप रहीं सुकुमार अंग इव बाल लता ।
आनंद लहरिसी उमगि रहीं कौमार शेश इव बाल लता ।।२१।।

जल जात पीत दल भिन्न रचे मनि चन्द्र कान्ति गन तेज रचा ।
मधि वीर बहूटी पंक्ति रची मृदु नील चक्र गन तेज रचा ।
विस्तृत अरुन रस सुभग रचा पुनि भौम कवीगन तेज रचा ।
पुनि अरुन भूमि पर रमा रचो स्वस्तिक गन उज्वल तेज रचा।।२२

चन्द्रार्घ चक्र सर चाप वक्र भृंगार कल्प तरु बिजन सजा।
वृषभ ध्वजा अंकुस कच्छप परिघ असुर दल वलन सजा।
गज वाज दुंदुभी सुधा कुंभ पुनि इन्द्र वज्र गिरि निधन सजा।
सकट शक्ति हल छत्र बलय तोमर स्वस्तिक असि भवन सजा॥

मीन संख अरविंद रचा पुनि चमर यूप सुर धेनु रची।
ऊर्ध रेख गोपद मृदु वेदी विजय माल सो चित्र रची।
विनीति भाव सुर जूथ रचे सुभ अंग अधिष्ठिति सिरी रची।
जनु अस्त्र भेंट धरि विनै करैं सुर मदन भूप हित अनीरची॥२४

रसराज भूमि गत रती स्वयंवर रचिआनन्द यूप पै मीन चलै।
विजय माल हित मदन सजा पुनि इष्ट सिरी पै प्रवीन चलै।
अस्त्र भूमि धर नम्र झुक्यौ कर जोर विजय हित दीनचलै।
रमा इष्ट वर विजै करै सज रती योग पै लीन चलै॥२५॥

तडित आभ लावन्य मही शुचि मृदुल रती सर सुभग घना।
नव तरुन भाव गम्भीर उर्मि उज्वल अनंग रस सुभग घना।
रुचि मंद्र लंपटता रश्मि उपमा सुर मर्दन सुभग ठना।
पुनि छवि सिरी उद्योत भई परदीप्त छटा गन सुभग पना॥२६॥

आनंद सिरी गत भोग वेश्मनि महा प्रेम नृप विलस रहा।
छटा जुवति गन नृत्य करैं रचि मंगल प्रद शुचि भाव महा।
तोरन गत उपमा भीर भई चली हेम सुर सरी धार अथा।
जल जात कोश गत लोक रचा कंदर्पध्वजा कर शोर अहा॥२७॥

जांवूनद थल पै विष्णु प्रभा उज्वल चपला रस धार वही।
स्वाती पथ नभ में जाल बिछा उपमा नव गृह की धार वही।
शशि विंदुछटा प्रकाशकरै पुनि हरितआभकविधार वही।
मयूख भृमर लावन्य लखा आनंद प्रभासर धार वही॥२८॥

गत मेघ खंड तल मेरु शृंग पुनि वेदी चारु मनोरमा ।
श्रियाबिष्ट कंदर्प वपू धर रमै रती रस मनोरमा ।
पानमत्त आवृत तनु पर दीप्त महा छवि मनोरमा ।
आधिपत्य को अर्घ्य देंय पुनि छटा जुवति गन मनोरमा ॥२९॥

विद्ध काम सर सोस अमीरस मृदुल रंभ तरु रुचिर प्रभा ।
स्याम मेघ तनु मिंदु बिनिर्गत जनु तड़ित सिंधुगति रुचिर प्रभा ।
श्री प्रदीप्त युग कर चितत्य लखि मदन धाम ज्यों रुचिर प्रभा ।
मिलि कलिंदजा देवधुनि चलि पावन हेतु रुचिर प्रभा ॥३०॥

रती अंक पर काम प्रभा पुनि रचि मराल गन रज्जु कसी ।
व्यक्त छवी शृंगार यथा मन मथाविष्ट ससि रज्जु कसी ।
हेम इन्द्रमनि सुभगप्रभा पुनि वृद्ध भूमि सुत रज्जु कसी ।
वरुन तरुन कर योग छटा उज्जल सी रस्मी रज्जुकसी ॥३१॥

बालार्क चक्र शशि जाल चक्र पुनि छवी जाल गत वेदि रची ।
चपलांशु मध्य विधि वहन विधेतल इन्द्र कान्ति वपु वेदि रची ।
गांधर्व जूथ कवि मध्य रचे सारंग चाल गति भेदि रची ।
कलिंद सुता का भ्रमर ऊर्ध जनु रतीनाथ मन खेदि रची ॥३२॥

अरुन आभ के तले रुचिर तंत्री कलाप गन जूथ सजा ।
पुनि रती सार का मत्त सजी कंदर्प कला गन जूथ सजा ।
उज्वल बितान विधि लोक सजा पर दीप्त छटा गत यूथ सजा ।
लावन्य सारदा सुभग सजी नृत्यत मराल गन यूथ सजा ॥३३॥

छीर सिंधु सर रमा रची परवीन सारदा रंग भरा ।
चद्र तेज गत मेरु रचा कुछ भौम मेघ का संग धरा ।
बालार्क मध्य ससि सुवन रचा विशुद्ध चित्रता अंग करा ।
विहरत अनंग सर जुवति छटा गरु मान रती मद भंग भरा ॥३४॥

हेम आभ पर नील जलज सुरभी तनु अंकित कोष्ट किया।
चपल मध्य पुनि मेघ भृमर अरुन चक्र गत कोष्ट किया।
वरुन जाल फंस देव अना सुरपति समाज जनु कोष्ट किया।
सिंधु चक्र गत पूर्न शशी भर भानु बेष्ठित कोष्ठ किया ॥३५॥

रवि सुता भृमर बिच रजत वेदि सकलेष्ट प्रदा अस्थान रचा।
लावन्य सिरी रस वृद्धि करैं मदनेष्ट प्रदा अस्थान रचा।
अरचा छवि जुवती जूथ करें निखलेष्ठ प्रदा अस्थान रचा।
कंदर्प रती सर केलि प्रदा अखिलेष्ठ प्रदा अस्थान रचा ॥३६॥

सिरी कोष्ट तल सरस मेघ मकरंद सरित मृदु वेग चला।
रति अंक लावण्य मही लख मीन केतु रस वेग चला।
पुनि तडित आभ पर उमगि सिंधु वर उर्मी गन रेखा वेग चला।
सौरभ समूह उज्वल सनेह बस पिंगल छवी भर मेघ चला ॥३७॥

छवि चक्र रंध्र बालार्क अंशु लावन्य छटा जुत दृष्टि परैं।
संकर्सन मनी प्रकास कर मुख मेल अरुन रथी दृष्टि परैं।
पुनि भोगवती सर सुधा सोस बासक जा कोमल दृष्टि परैं।
कै पीत जलज दल चंपकली सिसुमार चक्र गति दृष्टि परैं ॥२८॥

हिरण्यगर्भ प्रदीप्ति निरखि अरुन मन सोच भया।
विद्रुम पाटल की क्रान्ति हरी बंधूक सकुच सकोच भया।
मेरु प्रभा मृदुरंग किया अरविंद सजा पुनि पोच भया।
अनुराग मथन कर प्रभा सजी सुभ योग पाय सुभ रोच भया ॥३९

आनन्द सार सर पदुम खिला किंजल्क मध्य अरविन्द खिला।
तड़ित मध्य रवि तेज खिला पंचानन रश्मी सिन्धु खिला ॥
छीरसिन्धु गत मेघ खिला पुनि अरुन वेग छवि भिदं खिला।
हेम जलज मकरंद खिला जनुरति अनंग सर सिन्धु खिला ॥४०॥

शरद चंद जनु कनक वेष्टित मेरु खंड गत मेघ डरा।
सन्निकृष्ट मृदु सिखीसुता भृगुसुत शशिसुत मेघ डरा।
दर्शनीय सखि कलिन्द सुता गत अरुन प्रदीप्त तट मेघ डरा॥
रिपु सूदन हेतु मदन चाप कस्मीर सुता तज मेघ डरा॥४१॥

चंपक सुता मधुपेन्द्र यथा विभ्राज हंस रिपु नृत्य करें।
रथी अनंग सर सुभग मनोहर रस बिद्ध तारका नृत्य करें।
पुनि मेरु दरी विभ्राज कृत्तिका विभ्रंस छटा सुचि नृत्य करें।
तड़ित रंग महि सरस नाग वधू भोगवती थल नृत्य करें॥४२॥

चन्द्र खंडगत अमीपान कृत जलजात खंड गत अली झुकै।
नृत्यत वितर्क इव प्रिया अंक अस्फुरति तरुनि नव भली झुकै॥
शुचिनिर्विनोद कौमार शेश कन्दर्प भीत रस डली झुकै।
आनंद सरित रत मीन नचै कुञ्ज भाव गूढ़ वन रली झुकै॥४३॥

तपनीय आभ अरविन्द मध्य मकरंद उमगि कन विदु झरैं।
यथा रती संग्राम विज कृत रुजा क्लांत कन विन्दु झरैं॥
उत्कट जोबन मधि चाल रमै विद्रुम निरस्त रस बिन्दु झरैं।
चक्रांग पंक्ति अरुनांसु प्रभा मिश्रित छवि उज्वल बिन्दु झरैं॥४४॥

गौर कुंभनि खंड ऊर्ध कंदर्प यंत्र गत वाल रची।
विमर्दोत्थ चक्रांग सुता मधुरास्फोट भर हाल रची॥
अंगानुकूल इव ललित वधू नील तरल छवि चाल रची।
सलिल निम्न संभूत महामर्कत मयूख गन माल रची॥४५॥

रति विलास थल रंग लखा किंजल्क गुन्द्रा नवीन लखी।
पुनि रमा विभूती रूप परंभुत श्रिया ज्वलन प्रवीन लखी॥
संक्रीडमान अरविंद हस्त लीलासि पांग रस लीन लखी।
चंन्द्राग ललित प्रचलित भाव मनसिज विलास सर मीन लखी॥

सिंधु वार केत्यकि अशोक चंपक वंजुल चुन छवीलता।
पद्म मालती मधू मल्लिका कुंद आभ मृदु फवीलता॥
अर्जुन मुचकुंद तिलक मलयज सुभ अंगबेष्टित फवीलता।
रती मयंक अनंग सुधायुत उज्वल मयूख ज्यों छवीलता॥४७॥

विनमयसा योग लखा अद्भुत पुनितड़ित अंशु मनिचन्द्रभखे।
भार्गव विस्तृत गत भौम लखा जलजात अरुन मुख वंद लखे।
निधि जाल बद्ध रस कामलता सुरभानू बेष्टित फंद लखे।
पंच शीर्ष जुत मदन यथा रस रती अवर स्वच्छंद भखे॥४८॥

युग हेम खंड गत छवी सुरालपन लान्य चक्रगत अमी भरा।
स्वकुसुम एव सुचारु वदन स्वजात आभस्व वपू धरा॥
मुखांबुजै असितांग पांगै नृत्यति बिलोल छवि रहसि करा।
अस्फुरति छटा विभूत सुवाल इव रतीनाथ लख मही परा॥४९॥

दो कनक आभ सी जुवतिं लखी मन सकुचि रती प्रस्थान किया।
डगमगत मदन बस रंभ जथा भुजगेंद्र वसन छवि आन किया।
चक्रांग माल पुनि बद्ध करी गोपेन्द्र भाव जनु भानु किया॥
ललित अंग पर मदन सजा रसिकेन्द्र मधुर रस पान क्रिया॥५०॥

कनक शृंग को चन्द्रलता वेष्टन करि सो है जुवति यथा।
मनमथाविष्टतीव्रानुराग प्रियस्यांके स्फुरति यथा॥
नृत्यत विहंग गन भाव परा तंत्री स्वर सम ताल यथा।
भ्रमंत लक्ष्मी गन चारु माला कर कनक कमलैं विंभूसि यथा॥५१॥

समाकीर्नं बहुरत्न भूषितं जात रूप जल जात प्रभा।
अरुन जात शुचि मृदुल गौर ससि वक्रमाल रचि जात प्रभा॥
स्वर भानु छवी विलुप्तं बहु चित्रित रश्मी जात प्रभा।
नतोस्मि तस्मै रुचिरांग देवीं रस वृद्ध कारिनीं जात प्रभा॥५२॥

लाक्षा रस रंजित पीत जलज विन्यास योग्य विकल्प करैं ।
कुनकत मराल स्वन मत्त भरे रभिलारि काल विकल्प करैं ॥
मन्मथः विष्ट नयनयोर्विभ्रमा देस दक्ष विकल्प करैं ।
वासाश्चित्रं वहुजालमंडितं पुष्पोद् भेद भूषन विकल्प करैं ॥५३

सौंदर्य लहिर सी लिपट रहें कटिचन्द्र लता रस लिपट रहे ।
पुनि चन्द्र खंड युग सरस गंड पर वरह भार से मटक रहे ॥
प्रचलित कीर मुख ललित कवीजन अधर सुता हित झपट रहे ।
चकित हिरनीमिव दृष्टि पात लखि मम लोचन लोलुप अटकि रहे॥

शशि प्रकाश बदना अम्लान्य माल्य कुंडिल दुति चारु मनोहरा ।
विद्यु दाम अस्फुरति चक्कै मद व्यायाम दृग मनोहरा ॥
वेनीभूत प्रतनुस्खलित सुभगा अलकावलि चारु मनोहरा ।
विजयंती सौभागंक श्रेनीम आनन श्री उज्जल मनोहरा ॥५५॥

कंवुमूल सुक पंक्ति रची कंदर्प विजै हित पास रचा ।
नील कंटि सुत आभ सजी पुनि सहस्त्र शीर्श सुरवास रचा ॥
विक्षिप्त मराल गन प्रसुप्त रचे किंजल्क चक्र मृदुभास रचा ।
तरल भाव मधि रमनी छटा रस राज आज रति हांस रचा ॥५६

कनक विंबपर मेघ डरा चपला रस रेखा वेग चला ।
शिशुमार उदर रवि अंशु विंधा कवि गात्र ऊर्ध शुभ मेल भला ॥
अरुन चक्र धनु मध्य लखा कनक कली पै शर नेह पला ।
कलिंद सुता गत रक्त जलज पुनि मैन फंद छवि यूथ डला ॥५७॥

परिभ्राम जलज मृदु हस्तरता रस केलि भ्रमर रस राज सचा ।
भ्रूभंग मदन नट निर्त करैं समताल कीर कवि साज रचा ॥
नव दल विद्रम रस झलक रहा सस्मित छवि छटा समाज रचा ।
मीन लोभ प्रचलित कुवलिय जनुरति विलास सर आज रचा ॥

पुनि हेम नीर सीतल विशुद्ध शुचि चपल आभ में बन्द किया ।
नवरती रंग में घोल विधी ने मीनकेतु रस कंद किया ॥
रचि छवि मयूख गन चक्र मध्य उद्योत प्रेम सर चंद किया ।
मकरंद पान अलि वृन्द करै वासकजा वेष्टित फंद किया ॥५६॥

चन्द्रभाल से चला मैन सर चंपक प्रसूत पैं धसि भयो ।
कुसुमासन खंड विभाग किये स्वर भानू तन के ईस भयो ॥
अरुन छवी प्रदीप्त मध्य सुचि कवी ऊर्ध परमीश भयो ।
चपल पटल पर रचित किया उज्ल अंकित शर शीश भयौ ॥६०॥

शरद परव विधु धोत अमीरस जुगल खंड करि रुचिर धरे ।
उर मदन मीन अस्फुरैं मनोहर मधुप रती मद प्रचुर भरे ।
नील जलज संभूत नवीन किंजल्क पंक्ति रचि सुचिर करे ।
लखि विमल जलज दल हेम खंड गत असित नीर नव नेह सरे॥

चपल चन्द्र चंपक नवीन दल मध्य अरुन रस रंग सजा ।
जनु महा भाव रसप्रेम सजा पटल विलगाय सुरोचित अंग सजा ।
मदन कलक पर झलक बिलोलित छबि फुरति रती दृग भंग सजा।
कै चपल खंड पै रमा अजित का मनमथ विलास रस रंग सजा ।

शृंगार जलद गत गूढ निधि लख रमा रमन सुरजूथ वने ।
मन मथ मंदर धरि रती कमठ प भाव रज्जु कसि मथन ठने ।
नव छवी चन्द उद्योत भये मधु श्रवत प्रेम रस सुधा सने ।
उपमा रमनी सह तत्व अमर गन महा महोत्सव सजे घने ॥ ६२

अरुनोदय पर छबी जूप में जीव गर्भ धरि शशी बधू ।
मेन पास में बद्ध जथा चंचल गति नृत्यति मीन बधू ।
हेम पालने शर्द निसाकर क्रीडत मिलि संग छटा बधू ।
लच्छ वेध जो करहि मदन नृप तौ पावै उपमा सजी बधू ॥ ६४

निगम रहस थल कनक गुहा तल रचि तोरन पर सजे अगस्त ।
बपु शुद्ध सत्व मय तपो गर्भ युत करें छटा विभ्रंश अगस्त ।
त्वक भाव स्वाध्याय ध्येय बस चंचल गति युत चले अगस्त ।
त्रिविध तिमिर भव दोष विजय कर बृह्म लोक पथ रमहि अगस्त।

क्या विद्यु लता भुज अंग वेष्टि करि स्वाती पथ तज चन्द्र चला ।
या प्रथम मनोरथ रती रहसि मिलि उमग मनोभव कंद चला।
चन्द्र तूण उर मेल बासुकी गहि पुच्छ गरूड मुख बंद चला ।
ना क्षीर उदधि गति रमा रूप का नव बिकास छबि फंद चला ।।

लखि प्रेम वारधी बेग विमल कर त्रिय विभाग तट रमा रहै ।
मधुर प्रदीप्ति सुची स्निग्ध नव नेह नीर वर बेग बहै ।
नील कंठ चक्रांग फुरै स्वन श्रवन सुखद त्रय ताप दहै ।
बृह्म सुता अज ईस इस पति मंजन करि फल विशद लहै ।। ६७

तपो नेष्ठि बत ध्यान कर उपमागन ऐसा लखा स्वरूप ।
रति मन मथ रस सोन पान करै है भाव यज्ञ का उज्जल यूप ।
यह प्रेम देव का यजन करै सुचि दीक्षित नवल नेह वर भूप ।
विद्युलता तन चन्द्र दामरी वेष्ठित सजी श्री छबी अनूप ।। ६८

वृद्ध रवी की सेस प्रभा तट मेचक गन छवि विशद वितत्य ।
पुनि प्रालेयाद्रि खंड वितत्य मध्य सदन स्थल गत रती वितत्य ।
कै चपल अंक प क्षीर विंदु सहस्रानन गन पर सिरी वितत्य ।
सौंदर्य वारधी रूप तट गतो या प्रेम कंद पै कबी वितत्य ।। ६९

क्या रती मदन संग्राम विजय छवि नक्षत्र जाल गत क्षिप्त भई ।
सुचि रूप उदधि उर विविध विभूती दीप्त सिरी पर दीप्त भई ।
पुनि रमा बिलास केलि अस्थल गत चिद बिलास छवि लीप्त भई ।
विद्युलता उर क्षिप्त कवीगन वैखानष व्रत दीक्ष लई ।।७०

अदितो सुवन की बाल छवी पै देव धुनी छवि विशद खिली ।
कंबु देस को वेष्टि कलिंदजा अवत छटा जल उमगि मिली ।
पंक्ति वद्ध तट योग नेष्टि बत हरित तनू तन दुती भली ।
छवी पटल विलगाय शारदा हिरन्य अंश युत दीप्त चली ॥७१॥

छवि देखी शृंगार रमन युत रूप उदधिगत रमै बिलास ।
तरल तरून सौंदर्य त्रिय वर छिटक माधुरी छटा बिलास ।
विद्युलता जुत चन्द्र दामरी चन्द्र जलज पर दीप्त बिलास ।
अरुन द्युति तट मधुर पीठ पर नव मनमथ रस केलि बिलास ॥

विभौ परम तत ईस धीस गत धेय रूप में रंग डला ।
ध्येय अखिल में ध्यान विमल वर रूप उपासन सग चला ।
तदयोग हीन तत रूप जुदा सहयोग अनूप अभंग कला ।
तत लक्ष नियम निर्देश लखा युत नित्य धारना अंग भला ॥ ७३

भाव सिन्धु गत तत्व २ गत ईस ईस गत सर मैंन लखा ।
ता मध्य अभीप्सित श्रोत लखे शुचि श्रोत चक्र गत ऐंन लखा ।
तहां भाव गम्य गति रुद्ध भई पुनि ईष इष्ट वर सेन लखा ।
रस जन्म महोत्सव पर्व लखा श्री रूप सनातन रहनि लखा ॥७४

शची अंग क्षीरोद विमल दुर्गम्य सुरासुर दृष्ठि परे ।
भाव भोग सरपेन्द्र सैन गत प्रीत रमा को संग करे ।
विरद वेद अनुराग विशद यश विजय कीर्ती योष भरे ।
आनंद वृत्ति सुर यूथ उपस्थित काल योग तिथि रूप धरे ॥ ७५

पूर्न कलायुत सौम्य वस्स सावित्रि उपास्प छै योग भया ।
मृगराज अंसु में पूर्न ससी तन सिंहक सुत का भोग भया ।
वान क्षेत्र में धीष्ट देव गुरु युग असंखो के सोध भया ।
लग्न रासि में सचिव भूप वत जीव चन्द्रका मोद भया ॥ ७६

जीव दृष्टि लखि कवी भूमि सुत ऊर्ध दृष्टि में ध्यान करैं ।
रिषी कोष्ट गत सिंह सुवन सह प्रभा पती सन्मान करैं ।
केन्द्र वेश्म में शशी सुवन युत भृग सुत उच्च प्रमान करैं ।
मिलि भौम मंदतम जीवहरित तनु लग्न तरून शशिभान करैं ॥

छवि जाल विनिर्गत ललित माधुरीआनन श्री उज्जल मनोहरा ।
विद्युलता वत फुर प्रभा कुंडल चंचल छवि मनोहरा ।
वेनी भूत स्खलित सुभग अलकावलि चारू मनोहरा ।
मृग मद चित्रित शुचि तडित पटल जल जात खंड दृग मनोहरा॥

विश्व विजै हेतु चाप खंड जुग मदन वेदि सजि अरून प्रभा ।
रुचिर कीर सुख नचत कवी चंपक प्रसूत दल कनक प्रभा ।
अधरादन विद्रुम कुन्दकली नव मृदु शुचि सस्मित चन्द्र प्रभा ।
चिवुक खंड सुभ चपल आभगत सित विन्दु दिये अली प्रभा ७६

अखिल रसामृत कनक केतुकी चपल कलेवर दुती महा है ।
कुंदा भस्मित मुख उज्जल गंड स्थल कुंडल छिटक रहा है ।
स्फुरत कपोलन पै चंचल छवि रति मन्मथ झलक रहा है ।
रसिक राज की कुटिल अलक सम अलिगन कूर कहा है ८० ॥

चन्द्र खंड युग सरस गंड छवि लोलित चंचल मदन तुरंग ।
रति रहस स्थल स्फुरित छटागन नृत्यत उडुगन काम कुरंग ।
तरल तरून पाठिन सुवन दृग स्फुरै जलज दल अलीतुरंग ।
रुचिर कीर छवि दीप्त सुत नव विद्रुम दल अधर सुरंग ८१ ॥

विहंस विनिर्गत छटा दामरी कंबु कोकिला कंठ प्रवीन ।
जलज कोस पर रमा बिलास कै सज्यौ शारदा कुन्द नवीन ।
निधी जाल पर क्षिप्त विपुल उर भुजा विभूषित गजतुंड लीन ।
पीत पद्म कर खंड उदर वर त्रिवलि रेख युत भ्रमर सरकीन ८२ ॥

केहरि कटि छबि कटि तट भासै चन्द्र लता रस विलसि विलास ।
रंभ खंभ उरू विमल मनोहर नील पाट पट चित्रत भास ।
छिटक छटा छट द्योत दिसन प्रति नक्षत्र चपल शशि भ्रमै अकास
ललित ढार ढर ढरी मधुर मृदु गोल पीडुरी गुल्फ विकास ॥८३॥

धुनि क्वनक कनक मंजीरझलक, शुचि नूपुर मंजुल विशद मराल ।
चंपक कोरक नव चन्द्र जटित दल सौरभ चित्रत भूषन जाल ।
काश्मीर किंजल्क करनिका कोस तले दुति दिपै गुलाल ।
जलज मनीहित क्षीर फेन पर रम हंस सुत मंजुल चाल ॥८४॥

यह मधुर माधुरी रसिक राज की रसिकन हृदय पगी है ।
छवि विलास रस केलिरूप रूप में नव नव लगन लगी है ।
सुख पीयूष जिन पान किया उर शारद विमल जगी है ।
संचित मूल विनष्ट किये सब विष रस मीच भगी है ॥८५॥

प्रेम पटल पुट भेद उदित छवि छटा पसारी ।
नव नव रूप विलास माधुरी श्रवत पनारी ।
यह मगल रस ध्यान रसिक जन जीवन कारी ।
विलसहि मुदित मराल विमल मति उज्जल चारी ८६ ॥

कुण्डलियां

मंदर कीनों तत्व भाव की रश्मी वेष्टी रती कमठ ।
आधार प्रेम वारिधि मथ्यौ श्रेष्टी प्रेम वारधी मथ्यौ ।
दिव्य अनुराग मुदित मन तब उपमा जुवती जूथ ।
फुरे उज्जल रसभरे तन पुन झलके रसकंद मधुरछवि सुन्दरताई ।

हरि अंगन प्रति देस सजी उपमा झलकाई ।
सो प्रम वारिधी भ्रमर गत भूषन गौर सरूप ।
तत्व बिना पावे नहीं अक्षर अर्थ अनूप ८७ ॥

गौरांग भूषण मंजावली

दोहा

द्वैताद्वैत विचारि कै बहुरि विशिष्टाद्वैत ।
ब्रह्मा द्वैतै शोधिकै सोधहि शुद्धाद्वैत ॥ १
भेदा भेद जाको कहै सोई अचिंताभेद ।
गौररूप निर्देश करि यहि प्रतिपाद्यो वेद ॥ २
योग हीन पूरन नहीं करै तौ लच्छन होय ।
चिंताचिंत लखाइय पूरनतम है सोय ॥ ३
ध्येय ध्यान युत धारना मध्य लखै जो ईस ।
चिंताचिंत विलासि सो पूरनतम जगदीस ॥ ४
श्री गुरु कृपानिर्देश करि भूषन विशद विलास ।
दीन गौरगन निरखिछवि प्रमुदितमोद उलास ॥
पुनरावृती दोष जो काव्य मध्य नहि सोय ।
ध्यान भाव रस रूप यहां नित नूतनता जोय ॥ ६

इति श्री गौरांग भूषण विलास काव्य सम्पूर्ण ॥

अथ प्रार्थना

नमो नमो श्री गौर गदाधर अवधूत प्रेम प्रद श्री नित्याई ।
रामानन्द स्वरूप नमो श्री वासादि अद्वैत गुसाईं ।
गौर पारषद नमो रहे प्रेम बस मत्त सदा ही ।
नमो श्री गुरु देव सनातन रूप दोउ भाई ।
नमो जीव गोपाल भट्ट करो मिल दीन सहाई ।
नमो भट्ट रघुनाथ गोसांई दान सरस मृदु आरति गाई ।
नमो नव द्वीप धाम सुर सरि चहुँ ओर बहई ।
नमो गौरगन वृंद पतित को लेव अपनाई ॥२१॥
नमो नमो वृज देश कृष्ण वपु समुभ्यो पावन ।
विनवों गोपी गोप पशु खग मृग मन भावन ।

लता तन गिरि कीट नमो सर सुलभ सुहावन।
नमो यसोमति नंद कृष्ण वहु भाँति लड़ावन।
नमो कीर्ती भानु प्रिया नित झूलहि पालन।
श्री दामादि सखा नमो नमो सब संग के बालन।
नमो कृष्ण बलदेव रमै नित वृज की खोरी।
ललितादिक सब सखी नमो वृषभानु किशोरी।
वृह्म वपू कर द्रवन वहै जनु जमुना भोरी।
अघ हरनी जल पावक करनी नमो जुगल रस बोरी।
वपु सुंदर सरस सरूप सुनो रज आरति मोरी।
जुगल केलि थल नमो धरूँ उर आसा तोरी।
नमो नमो गिर देव जुगल सेवा सुख लीनों।
भिन्नाभिन्न सरूप श्याम आपहि ने कीन्हों।
उज्वल मेरु सरूप नमो वृन्दावन चीन्यौ।
सरस माधुरी कुंज केलि दंपति रस भीन्यौ।
पूरन मासी नमो योग अद्भुत रस दीनौं।
वृन्दादिक सव दैन्य नमो जन विलपै हीनौं।

दो०— त्राहि त्राहि तृन दंत धर वृजदेवी सुख दैन।
कबहूँ तो मो मिलन की कहो प्रिया सों बैन॥

तेरी कृपा कटाक्ष बिन मिलै न जुगल विलास।
तो तन लख मम उर बढ़ै कछुक प्रमोद हुलास॥
हे जमुना तब पुलिन में बिहरें पिय सँग बाल।
जल केली सब मिल करें ज्यों चंपेकी माल॥
तब इंगित कर नैंन ते मन तन ओर लखाय।
बैन सरस निज ओरते कहियो भाव जताय॥

हे धृन्दा मम हित करन सेवा समय सुहाय ।
चरन पलोटो दुहुन के तव प्रिया करन मुख लाय ॥
मधुर प्रिय धुनि सेविनय मम हित जो विधि होय ।
आपुन भूली सुख मे तनक अंशु तन जोय ॥
हे ललिता मम स्वामिनी है सब सुख की मूल ।
हे जुगल महा रस मोदनि मम सुधि गई क्यों भूल ॥
हे अष्ट अधिप अग्रनी विनय करों कर जोर ।
मग आवत जात नित कब हूँ मिलै निस भोर ॥
श्री रूप मंजरी यों कह्यौ प्यारी सुन अकुलाय ।
सकल सहचरी संग करि चली सु मम दिस धाय ।
अहो नवेली सहचरी अब तक भोगी पीर ।
कह कह मीठे बैन यों दोउ कर पोंछे नीर ।
उमगि उमगि हिय लाय उर पुनि पुनि कंठ लगाय ।
दीन गौर गन कंठ ते हार हरष पहराय ।
ता रस के सुख स्वाद को रमा न भोग्यो लेश ।
कोटि वृह्म सुख यों लख्यौ ज्यों जन श्रीपति देश ॥ इति ॥

अथ शृंगार मंझावली पूर्व भाग लिख्यते ॥

प्रार्नमा—छप्पय

कबहुँ तो भो तन हँसि हेरो गर्व गुमान रहैगौ कबलों ।
अंतर पट ना खुलै संग बिसरौ खर्व गुमान रहैगो जबलौं ।
पीड़त ताप बिना तव कृपा सर्व अज्ञान बहैगो तबलों ।
जब कर गहौ हिये में जागैं सुज्ञान लहैगौ अबलों ॥ १ ॥

वैसा ही रूप सजा दिल भर हम ग्राहक इस हुश्न परस्ती के।
देखत ही मुझे निकाव किया हो इश्क परस्तों मस्ती के।
हम भी क़दमों के चेरे हैं तुम हौ महरम इस बस्ती के।
इश्क पेच का भ्रमर कठिन तुम हौ खेवा इस किस्ती के। ॥ २ ॥

बाल रवि की प्रभा मध्य कुछ विश्व कोस सा भरा हुआ।
रक्त सिन्धु मथ काढ़ मधुस्मा उज्वल सी आभा धरा हुआ।
फिर श्याम घटा की छबि मध्य चपला घेरा सा घिरा हुआ।
विच कवि जीव भूमि सुत राहू योग शशि सा करा हुआ ॥३॥

सुधा मयंक यूथ मिलि बैठै रूप छटा गुण तेज लिये।
मलियज रस भृग मत्त सुता कश्यपजा तनु को मेल किये।
जिमि विपक्ष भय त्याग अमरगण सुधा पान करें हर्ष हिये।
सुभग रेख का योग पाप क्या स्वर्ग धाम का घेर दिया ॥४॥

हेम पदम दल खिले हुये दो सौरभ धन मदकारी से।
भूमि सुत तन में बास करै ज्यों सचिव योग अधिकारी से।
क्या छवि जाल अस्थम बाल रवि बिहँसि नेह रुद्धकारी से।
कै सिंधु सुता के सुभग बरासन लिये जलधि सधकारी से ॥५॥

लै स्याम सुधा का सार मैन नृप छबि यंत्र में ढाले थे।
दो बाल कल्पतरु बूटे से कर नेह शची ने पाले थे।
नील मणि अस्थम विधि ने रचे रती मन साले थे।
फिर मेरु प्रभा ने ढाँक लिये यह रूप तेज मतवाले थे ॥ ६ ॥

चपला की अरची गूथ किसी जालिम ने ऐसा जाल रचा।
जलसुत नौग्रह को संग लिये विधि वाहन का सुर चाल रचा।
ताल ग्राम सुर सोध बिन भरतास्यकार ने हाल रचा।
क्या छबि समुद्र के बीच मदन ने योग पीठ सुरसाल रचा ॥७॥

अब श्राम ताल के ऊर्ध्व झुकी दामिन ने अपना पोस किया।
जनु मदन राज के तूणा भरे कर विजै वान को तोष दिया।
फिर सची पति ने सुधा कुंभ को हैम जाल धरि होस किया।
सुर यूथ छवि में वन्द किये चामिकर रस को सोष लिया॥८॥

हां मीनकेतु ने तड़ित छबि को हैम पास में वंद किया।
क्या रूप रति ते अधिक जान कौतुक के हेतु तंग किया।
सुर गण के यूथ पियें छबि को तब जान विपत्ती दंग किया।
तब छटा युवति इक प्रगट भई सब को मिल आनँद कंद किया॥६

उपमा का खोज करें शायर यह रूप क़हर का फेरा है।
मृगराज छवि को बंद किया गजराज गति को हेरा है।
क्या सिधु राज का भ्रमर छीन रवि तनया तन को घेरा है।
हां नील कमल सर बीच खिला रहै काम सुभट का नेरा है॥१०॥

एक छबि तेज का मंडल सा मध्य रूप रमा का वास करें।
फिर चन्द्र अर्णी सी झुकी हुई सब तिमिर दोष का ग्रास करै।
घर देव सुता की धार रहै निर्मल सी कलमस नाश करै।
क्या अखिल सम्पति जान सिंधु में तट वठ अमरगण आस करै

आनन्द निखल की राशि जान विष्णु ने अद्भुत ठाम रची।
रमा रानी की चंचलता लख छवि रूप एक बाम रची।
मोन केतु रस विलस रही निश्चल गति सुख का धाम रची
घर नील कमल दोउ हाथ लिये जनु इष्ट वेदिका काम रची।१२।

बृष ककुस्थ फिर गज ककुस्थ केहरी ककुस्थ छबि छीन लिया।
कै सजल मेघ की क्रांति खीच मनसिज के तन में लीन किया।
क्या सुधा कुंभ भर इसी यंत्र में सुरपति के मन को दीन किया।
क्या समीर रस रेख सुभग वर जनु मेरु प्रभा को हीन किया।१३

आनंद छबि का सार खेंच मनसिज साँचे में ढरे हुये।
क्या सजल मेघ सखरस के रस को खेंच छबि में भरे हुये।
जनुश्याह जलज सुकुमार छटायुत अमी पान सा करे हुये।
रतीसार रस फेंन मृदुल लावन्य सोष दल हरे हुये ॥ १४ ॥

फिर मदन राज के वान समझ उपमा युवति दल तोष भया।
तड़ित जाल को जलज मूल कस रतिनाथ मन रोष भया।
हाँ जीव कोष्ट में योग सोम सुत जान सुरन मन होस भया।
क्या श्याम बाल कर सुधा कुंभ लखि पंक्ति बैठि छबिकोस भया

यह छबि क़हर का दरिया है जो इसके आगे धीर धरें।
लख मीन केतु रस लहर उठै पल पल सीने में पीर करें।
क्या नील पद्म दल खिले हुये नोंकों पै किरनें भीर करें।
है निखल सम्पति को सुरमा काया काम राज कें तीर सरें ॥१६॥

स्याम सुधा के भरे हुये दल अरुण छबि ले जोश किया।
बिच छटा चन्द्र की उदय भई उपमा आभा रस कोस किया।
फिर अमर यूथपति तड़ित चक्र में बैठ तेज को होस किया।
आनंद क़हर ते प्रगट भई छबि बाल देखि रति सोस किया ॥१७

उपमा की भीर झुकी नभ पर लख अरुण रथी ने दंग किया।
हाँ मेरु प्रभा को संग लई अस्थल में उज्वल रंग किया।
अमर गणन की छीन इष्ट का सर सुधा कल्पतरू बंद किया।
गह चक्र मीन पै रमा चढ़ी कर बिजय रक्तमा संग किया ॥१८॥

नव ग्रहों का तेज खींच चामीकर रस में रंग भरा।
जलचर के साँचा ढले भये तारागण पंक्ति संग धरा।
कोस देस के अधो भाग मनसिज ने शोभा अंग करा।
यहाँ तड़ित सिन्धु का योग भया उपमा ने नभ का रंग हरा ॥

क्या छबिदार झिलमिला अनोखा शारद का सा बीना है।
फिर ग्राम ताल सुर भरा भया गान्धर्व कला रस भीना है।
चामीकर रस में जड़ा हुआ जनु मेघ तड़ित संग कीना है।
कुछ सिन्धु सार की रेख सुभग लख कामधनुष सा चीन्हा है ॥२०

जनु मेघ खंड में शेष बाल रबि तेज अनूप प्रकाश करै।
आनन्द सिन्धु में उदय हुआ फिर चन्द्र सरूप प्रकाश करै।
हाँ अमी नीर में चुआ भया छबि तेज रूप प्रकाश करै।
नव नीत छटा भर श्यामघटा मनसिज का भूप प्रकाश करै ॥२१

क्या मधुर सुधारस भरा हुआ अरबिन्द अरुण दल भाता है।
भीतर हीरों की पंक्ति जटी जनु रवि अस्त को जाता है।
फिर छटा युवति गण संग लिये शशि मेरुगुहा से आता है।
उर सिद्धि पीठ लख सरस्वती का तोरण में अरुण समाता है ॥

अरुण बिम्ब के उर्द्ध शुक्र ने उच्च ग्रहः में वास किया।
वह किरण अंशु में बाँध लिया चपला ने ऐसा साहस किया।
फिर छवि कीर की छीन मदन ने दावा अपना खास किया।
चामी कर रस को चूँस रहा क्या सुधा पान की आस किया ॥

इन मीन गति को हरण करी खंजन चंचलता हारे हैं।
फिर श्याह शान सी चढ़ी हुई मनसिज के खिचे कटारे हैं।
छवी क़हर में खिले हुये अर्विन्द छटा रतनारे हैं।
कुछ नेह रंग सा भरा हुआ शायर के दिल के आरे हैं ॥२४॥

उपमा ने नभ में वास किया दो काम कंद के प्याले से।
गुण रूप तेज के भरे भये आनंद यंत्र में ढाले से।
विघ छवि युवतिगण नृत्त करें बहुरंग छटा विस्तारे से।
तड़ित चक्र पुन झुके भये तन में कुछ बींधे तारे से ॥ २५ ॥

क्या छबि छरछरी लहरदार सौरभ के मद में भरी भई।
मीन नैनन की चंचलता पुन श्याह मशी की हरी भई।
शरद चन्द्र को चूँसि रही कुछ नीर अमीसा झरी भई।
सुकुमार सुता हैं वाशिक की फँसि इश्क नेह में परी भई॥२६॥

अब विश्व बिजै को सजा मदन धनु खंड खींच कें ठीक किये।
तड़ित जाल को पोस किया चामीकर शर को ठीक किये।
मध्य अरुण को बाँध लिया फिर शुक्र कीर को ठीक किये।
पुन शम्भु कोप का होस भया धनु भंग खंड कर ठीक किये॥२७

अब मेघ छबि पर तड़ित सजी तारागण पंक्ति यूथ सजे।
हैम शिकी दो झुकी भई कर योग छबि के यूथ सजे।
एक अरुण रूप में वेदि सजी पुन काम नैन के यूथ सजे।
चामीकर रस की छटा सजी सीपी सुत उज्वल यूथ सजे॥२८॥

चामीकर तोरण सजा भया बिच बुध छबि को चक्र रचा।
पुनि रति शारका सजी भई मुख मेल कबी को बक्र रचा।
झुक अरुण रथी पै छत्र सजा फबि विजय पताका सक्र रचा।
तड़ित चक्र रबि बाल सजा उडगण सत्ता को जक्र रचा॥२९॥

घन रूप श्याह मखतूल स्याह मसि रूप स्याह वर रूपस्यहा।
कुंद जटी अरबिंद जटी छबि चंद्र जटी कर रूप अहा।
रबि वाज गती रति राज गती अहिराज सुता धर रूप महा।
क्या लहरदार मन महरदार बस क़हरदार कर भूप रहा॥३०॥

कश्मीर गुही वर कुंद गुही अरबिंद गुही पुनि सोंन जुही।
चम्पकली मद दर्प अली सद आन भली गुन जोंन गुही।
राय चमेली मदन नवेली गह वेली सुन कोंन पुही।
छबीदार मन फबीदार नटवर के गल चुनि सोंन सुही॥३१॥

छबि अदाँ दार बर दिलांदार मन फिदाँदार क्या नूर सजा ।
दर्द दिलावर सुख सर्द दिलावर इश्क दिलावर क्या हूर सजा ।
तिरछी कर श्यानै नैन कमानै भृकुटी धनु तानें क्या शर सजा।
कुंज विहारी संग में प्यारी सहचरि सारी क्या जीवन मूरि सजा

—इति पूर्ब भाग शृंगार मंझावलि समाप्तम्—

अथ उत्तर भाग प्रारम्भ

प्रार्थना

अब जनि करहु दुराव दीन ते रशिक शिरोमणि स्यामा ।
हरहु निकाव हिये का कलमस प्रगट होय तव धामा ।
मन गजराज प्रेम आँकुश ते जपत रहत तव नामा ।
चरण छटा नखज्योति उमगि उर जागै कबहुँ सुबामा ॥१॥

पद तल छटा अरूणमा कोमल मृदु लावन्य सही है ।
सुर्ख प्रवाल अरूणमा पुष्कर रवि छवि उदय कही है ।
पाटल दल नव नीति कसूमी आभा सकुचि रही है ।
जावक रस बौरे पियै करते सौरभ सरस वही है ॥२॥

चम्पक सोंन जुही दल वरणे ते परम सुधारस साने ।
पूरण चन्द्र लसैं ता ऊपर ढूंढ़ि विधाता आने ।
चपला आन किया घेरा पुनि नौऊ ग्रह रिसाने ।
काम जाल की रेख तीन वरता पर परम सुहाने ॥३॥

ता पर परम सुधारस पूरित दो राजें मैन सुराई ।
दुहाई खेंचि हर्व तहाँ वैठैं परम महा निधि पाई ।
राज हंस कल मधुर रवावै शिक्षा तिन्हें दिवाई ।
रसिक राज संगीत कला में इनको प्रथम मनाई ॥४॥

छबि रस भरे चले दोउ कुल्ला झुकी घटा पुनि कारी।
बिजली जाल बिछयौ ता ऊपर उपमा सब ही हारी।
उडगण यूथ सुमत कर बैठे विधि ने रचे सँभारी।
सर्प राज जनु सिंध मथन भय आय झुकौ तनु धारी ॥५॥

उपमा और चली आगे कछु रती राज का घेरा सा।
कदली तरू सींच रहे रस में होय लाल भ्रमर का फेरा सा।
ऐसी समझि परै दिल में कहुँ मदन खजाना हेरा सा।
यहाँ लाल बिहारी रसिक राज का सदाँ रहै दिल नेरा सा ॥६॥

छवि छीन लई केहरिन चामिकर कसि मदन तूण सा बाँधा है।
कुन्दन सी आभा अस्थल की मधि सुधा कुंड सा साधा है।
मन छैल बिहारी का तामें होय मीन रूप आराधा है।
डूबै रहै सिंधु सुख भीतर रसिक प्रिया नहीं बाधा है ॥७॥

प्रेम सुधा छवि मथौ सिंधुवर प्रगटी कछु गर्भ भरो सी।
चम्पक दल सोंन जुही गूथे कै मानौ कुसम छरी सी।
नन्मथ राज पास निज बांध्यौ पिय मन दीन करी सी।
विद्युत लता काम रस कूसित मेरू प्रभा हरी सी ॥८॥

मैन राज के शिक्षित हैं यह हेम चक्रवा हेरे थे।
क रति ने कोप तप्ति चामिकर दो काम कबूतर घेरे थे।
मीन केतु मय गसहिं रसिक वर दस्त शीश धर फेरे थे।
क्या सुधा कुंभ रस भरी सुराई कर यतन लाल ने हेरे थ ॥९॥

क्या चन्द्रराज ने किरण जाल लै आकर इन्है छिपाया है।
हंसन की पंक्ति लसें चहुँदिश जनु सुधा सिंधु उमगाया है।
ऐसा मन समझि परै औरहु चपला ने दखल जमाया है।
वृह्मसुता रवि तनया सुरसरि इन मिल कर शोर मचाया है ॥

पीत मृनाल बाल छवि पूरित सुधा सिंध को सोस भये ।
चामीकर चपला सोंन जुही छवि मदन बान के कोश भये ।
सिंधु सुतामन सकुचि रही लखि मदन कोश के पोस भये ।
तड़ित सखी वासक जा शशि मिल छवि तूण में तोष भये ॥११॥

छवि समुद्र निज पाणि बिधाता मथ्यौ रूप रस गाढ़ी सी ।
कुन्दन चपला को सोध सार रस फिर मैंन साँच में ढाली सी ।
नरगिस का कुल्ला छविदार कै हैम सुराई ठाढ़ी सी ।
कल कंठ सोध सुर बन्द किये सब हेम रेख त्रय आड़ी सी ॥१२॥

फिर हेम चंद सा उदय हुआ क्या छवि सिंधु में ढाला है ।
यह प्रेम नीर में चूय रहा मनमथ का मानो प्याला है ।
इन शरद चन्द्र को बन्द किया लखि दोष बंक अरू काला है ।
सब रूप शील गुण तेज पुंज यह उज्वलता में आला है ॥१३॥

एक रची तलें सोपान छवि की है मदन राज की बेदी सी ।
जनु श्रंगार छबीले बैठी स्याम अनोखी मैं दीसी ।
मनसिज के मन को खींच लिया क्या दृष्टि बान से वेधी सी ।
यहाँ लाल रसिक वर फिदाँ हो रहे तजैं होय मत खेदी सी ॥१४॥

एक प्रेम सुधा का प्याला है सीपी सुत ता में वास करें ।
रवि अस्त प्रभा की लालामी बस द्वार खवासी आस करें ।
नीर सुतन में युद्ध होय तब सुधा पान की प्यास करें ।
रवि सुता दाव के कर्व लई जग्न सुधा स्वाद को प्राप्त करें ॥१५॥

दो यूथ छवी के भूल रहे चश्मों में छाया चोंधा सा ।
तेज पुंज रस रूप भरे लखि दिल में धाया कोंधा सा ।
विधि का सभी प्रपंच लखा सब जान परा है औंधा सा ।
क्या काम सुभट की सैन्य कहूँ कै पंचवान का फोंदा सा ॥१६॥

स्याम घटा की धार चलीं दो तेज प्रेम छवि पूरी है ।
क्या नागराज की छोहनिया लखि चन्द्र प्रभा पर रूरी हैं ।
मृदुल श्याह मखतूल सकुचि मन दिल विच कछु ना सबूरी है ।
कुछ जुलम जाल से भरी भई मोहन की जीवन मूरी है ॥१७॥

जल सुत का भक्त करै जालिम यह रतीराज का पाला है ।
चामी कर छटा प्रकाश करैं अब तक मेरे दिल साला है ।
यह अरूण छटा पर झुका रहै जनु पीता रस का प्याला है ।
अब ऐसी समझि परै मन में यह मीन केतु का भाला है ॥१८॥

हैं अर्द्ध चन्द्र से नोंकीले अनुराग नेह से भरे हुये ।
चंचल गति मनसिज बाहन से फिर श्याह शान से धरे हुये ।
कछु छवि सिंधुके छौंने से उज्वल रस मद से भरे हुये ।
उपमा चपला की छीन लई क्या मैंन सांच में ढरे हुये ॥१९॥

हा रवि सारथी उदय हुआ सब नव ग्रहों को संग लिये ।
क्या छवि सुधा को पान करें राहु के तन को तंग किये ।
फिर छीन विधाता वाहन को चपला ने चढ़ कर दंग किये ।
काम धनुष के खंड लिये कर पूर्ण शशि जनु रंग किये ॥२०॥

पुनि स्याह घटा एक झुकी हुई रस नीर गर्भ को धरती है ।
जोति वषिष्ट चामी चपला नभ मिल कर छवि को भरती है ।
रती शिक्षका शिखि सुता झुक सीपी सुत को ढरती है ।
क्या काम पताका विश्व जीत फिर रूप रमा को हरती है ॥२१॥

श्याम घटा को फोर प्रगट भई आभा बाल रबीसी ।
जनु सनेह बस पिघल मेरू गिर धारा रक्त फबीसी ।
क्या चपला पिंघल छवी में बैठी पीवै सुधा दबीसी ।
फिर हैमनीग सीतल उज्वल सा है सौरभदार हवी सी ॥२२॥

अब मैन पिटारे से निकली वो छवीदार सटकारी है।
चढ़ि चन्द्र सुधा पै झूमि रही भय सर्पराज का गारी है।
उड़गण को बाँध लिया तन में चपला को गह झटकारी है।
मीन नारि गति हरण करी क्या स्याम सुधा में ढारी है ॥२३॥

इन्द्र धनुष की रेख सुभग वर गूंथ सरस कोई माल रची।
नव ग्रह को बीन बंद कर तड़ित छीन छवि चाल रची।
कश्यप सुता मृगराज सुता हां रंभा सुत की थाल रची।
सीतल छटा दल मादक उज्वल प्रेम नीर धोय हाल रची ॥२४॥

जब रस शृंगार सिंधु को मथि हैं तब प्रगट होय निधि लोनिसी।
मीन केतु रस मिला होय पुनि भाव साँचिया ढोनिसी।
फिर छवी रूप से भरी हुई दृगसै एक मूरति सोहनिसी।
हरै ताप सीतल होय चश्में क्या प्रेम क़हर उमगौनीसी ॥२५॥

प्रेम सिंधु मथ काढ़ सुधा छबि उज्वल सा रस रूप रचा।
तेज पुंज गुन शक्ति भरा सा मुक्ति मार्ग का भूप रचा।
उमा रमापति जो सब नायक तिनके परें अनूप रचा।
यह रसिक राज का चमन बगीचा क्या मीनकेतु का रूप रचा२६

निश दिन मो मन में वास करे यह छवि सुधा आनन्द भरी।
तब रूप शील गुण उदय होय सर प्रेम नीर की पीर भरी ॥
वह छवि शृंगार घटा दामिन सी विहँसि मधुर कछु भाव भरी
जनु शाह चश्म अरविंद खिले फिर हाथ गुलदस्तों फूल छरी २७

इति शृंगार मंझावली उत्तर भाग समाप्तम्—

अथ सिद्धांत प्रनाली साखा लिख्यते ॥

छप्पै—कनक सार संभूत कल्प तरु गौर सो गाई ॥
परम गूढ़ अनुराग भूमि तामे प्रगट आई ॥
हरिदासादि दृढ़ मूल रहैं गंभीर सदाई ॥
उज्वल कोमल प्रेम लग्यौ फल ताके माई ॥ १॥

अबधूतादि अद्वैत सुभग अस्कंध सोहाये ॥
चौसठि साखा चलीं महंत निरमल यस छाये ॥
षड गोस्वामी निधि छयो ऐस्वर्य दुराये ॥
मनो पूरति करैं शरन जो आरत आये ॥ २ ॥

पुनिसाखा दल अमित कोटि शारद मति हारी ॥
रामानंद स्वरूप पुष्प सौरभ विस्तारी ॥
नवधा भक्ति विचार गदाधर रस संचारी ॥
गौर उपासक भक्त अली गन पियै विचारी ॥ ३ ॥

अखिल शास्त्र की सिद्ध पीठ पादप के तल में ॥
ज्ञान भक्ति रस भेद मनी सी उज्वल झिल में ॥
परम अधिप उप योग रूप की इस्थिति थल में ॥
गौर नाम की छाप देंय जीवन को कलि में ॥ ४ ॥

भक्ति भूमि के भूप रूप भूपनपति सोहै ॥
सीस सनातन मुकुट गौरपद छत्रक मोहै ॥
जीव सचिव गंभीर सरस पुनि ताकी कोहै ॥
षडऐश्वर्य सैन्य सब ही सनमुख रुख जोहै ॥ ५ ॥

द्वादस रस के कोष संपती कर तल राजै ॥
विमल भक्ति वैराग्य तीव्र वृज उज्वल छाजै ॥
मत वादी खल दले तिमिर ज्यों रवि लखि भाजै ॥
ज्यों शृगाल गन मध्य मत्त पंचानन गाजै ॥ ६ ॥

परम अकिंचन वृत्ति कृष्ण रस में मन पाग्यो ॥
कठिन विरह अनुराग प्रेम सर हिय में जाग्यो ॥
कुंज कुंज प्रति केलि निरखि दंपति हित लाग्यो ॥
लता पत्र में झलक स्याम सेवा पन साध्यो ॥ ७ ॥

गौर रूप बिन भजे प्रेम रस कहां कोई पावै ॥
श्री रूप सनातन विना कौन बृज को प्रगटावै ॥
विना कृपा शुकदेव भागवत कहां ते आवै ॥
विना भागवत कौन रास लीला को गावै ॥

नहीं भट्ट गोपाल बिन सेवा को सरसावे ।
विन करुणा प्रभु गनन की प्रीति रीति नहीं भावे ॥
लीला तत्व अनंत जीव बिन को दरसावै ॥
दरसे विन गोविंद रीत रस कहा कोई ध्यावै ॥ ८ ॥

व्यास सूत्र गंभीर जलधि ताकी नित माईं ॥
उत्तम भक्ती तत्व निधि धरी थल के माईं ॥
मतवादी गन असुर अमर जन मथ्यौ उपाई ॥
घोर अनीश्वर वाद सुरामति तिन को ध्यायी ॥ ९॥

पुनि शुक विरच्यो श्रुति सार भागवत रस को सागर ॥
स्यामा स्याम विलास कोटि आनन्द को आगर ॥
श्री रूप सनातन मथ्यौ कियो सो लोक उजागर ॥
जो रस वृह्म न मिल्यौ ताहि दै भरि भरि गागर ॥ १० ॥

श्री रूप सनातन मारग वांको समझ सूर यामें चरन धरौ ॥
कर करवाको पीन गूदरी तिलक माल आभरन धरौ ॥
सुन्दर विपिन पुलिन गिरि सर तरु वैठि जुगल उर शरन धरौ ॥
नाम कीरतन नृत्य गान तजि लाज भक्ति अनुकरन धरौ ॥ ११ ॥

चिन्तामनि बृज भूमि विलोकन नित नूतन नव भाव भरी ॥
धूसर धूरि अंग बृज रज से प्रेम मत्त अनु धाव करी ॥
गुरु अनुसरन भावको वारिधि उमगि उमगि कहीं गौर हरी ॥
श्री रूप सनातन आसा उरमे बृजगोपिन अनुभाव सरी ॥१२॥

छप्पै—सदा रहै एकांत जुगल में ध्यान लगावै ॥
गुरु वैष्नव देखि भूमि झुकि सीस नवावै ॥
आस त्रास करि दूर भागवत हित करि गावै ॥
मधुकर वृत्ती करै नेम वृत रीति निभावै ॥ १३ ॥

बृत्ति अकिंचन रहै धान प्रतिग्रह को त्यागै ॥
वहू सास्त्र मत वाद बुद्धि नहि तिन मे साधै ॥
लता सरोवर देख प्रेम हिरदे मे जागै ॥
फिर रूप सनातन गौरहरी कहि कहि अनुरागै ॥ १४ ॥

जब तन मयता होय देह की सुधि विसराई ॥
राधा कृष्न सरूप चलै जहां जहां जन जाई ॥
डरै भक्त अपराध ध्यान की होय सिथिलाई ॥
तब वृंदा विपिन विलास सनातन रूपहि पाई ॥ १५ ॥

श्री रूप सनातन शरन विन करै स्याम सो हेत ॥
विन तरनी जनु सिंधु में कूदहि अज्ञ अचेत ॥ १ ॥
श्री गुरु कृपा रुख पाय कै वरनौ स्याम विलास ॥
दीन गौरगन दास की कीजै पूरी आस ॥ २ ॥

॥ इति सिद्धांत ॥

रिलायन्स प्रिन्टिङ्ग प्रेस, गली दाताराम, रावतपाड़ा आगरा।

श्रीश्रीराधारमणो जयति

श्रीरामशिष्यं कटके सुजन्मं पौगण्डकाले गुरुसान्निधाप्तम् ।
गौरोदयोर्व्यां परियान्तमाशु श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।१

गौराङ्गदासादिभिरुन्मदेन वृन्दावने वासकृतं सहर्षम्।
भावानुरागेण वदन्तमुच्चैः श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।२

गौडीयभक्तै रचिता रसाढ्या उद्दीपिता ग्रन्थवरा हि येन ।
साहित्यरत्नं ब्रजभूषणं तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।३

विज्ञैः समेतं सुमनःसरस्स्थं ग्रन्थानुलेखं परिशोधयन्तम् ।
सद्भक्तिसिद्धान्तनिधिं सनिष्टं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।४

सौम्यं कृपालुं मधुभाषकण्ठं शुक्लाम्बरं क्षीणतनुं नितान्तम् ।
निःसङ्गमानन्दवपुं महान्तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।५

लीलास्मरन्तं सततं जपन्तं देवाग्र उन्मत्तपरं नटन्तम् ।
संकीर्तनामोदमोदं प्रसिद्धं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।६

भक्ताधरोच्छिष्टललातिचित्तं स्नेहाभिमूर्तिं चलनातिधीरम्
भक्तानभक्ताञ्च नमन्तमुत्कं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।७

रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्गयुक्तं मुग्धं प्रशान्तं नितरां हसन्तम् ।
वैराग्यसिन्धुं करुणैकबन्धुं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।८
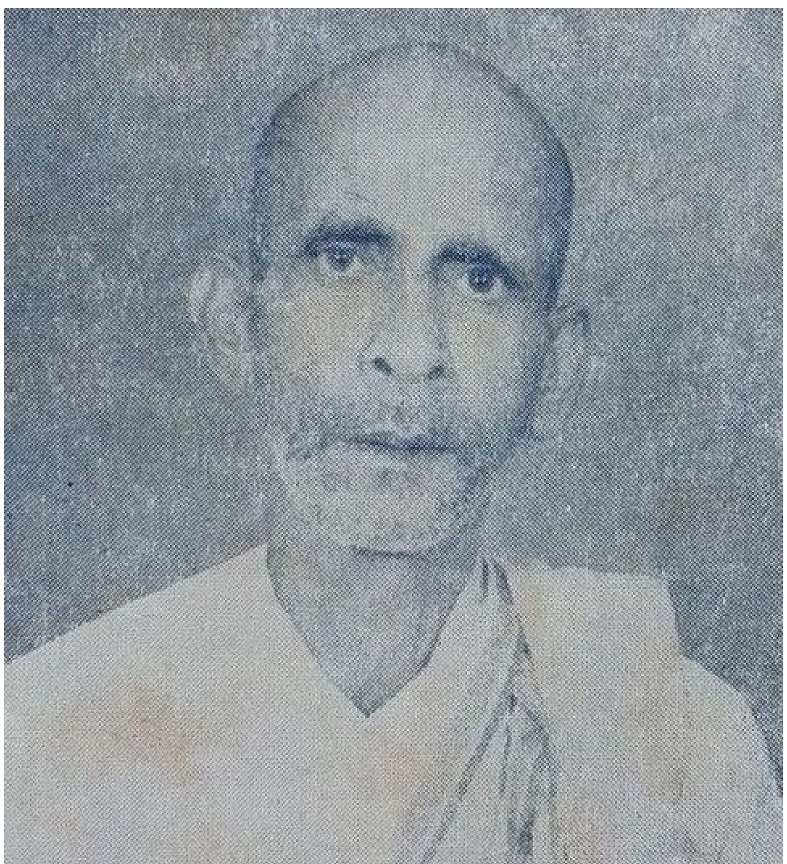
इति श्रीश्रीवृन्दावननिवासिना श्रीश्रीवृन्दावनदासेन विरचितं
श्रीश्रीकृष्णदासाष्टकं सम्पूर्णम्